ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 230-231
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

कमलेश्वर का जीवन का संघर्ष : एक विश्लेषण

1. नीलम सिंह
2. डॉ0 ममता सिंह

1. शोध अध्येता, 2. प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर (म0प्र0), भारत

Received-22.09.2023, Revised-24.09.2023, Accepted-29.09.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: ***कमलेश्वर का जन्म 6 जनवरी, 1932 को मैनपुरी कस्बे में हुआ। इनका पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना है। कमलेश्वर के पिता जगदम्बा प्रसाद सक्सेना माता शांती देवी थी। शांति देवी में वैष्णव संस्कारों का अधिक प्रभाव था।***

कमलेश्वर को बाल्यकाल में सभी कैलाश के नाम से पुकारते थे। बाल्यकाल में भी भाई एवं पिता के बिछोह के कारण परिवार में आर्थिक तंगी आ गयी, जिसके बारे में कमलेश्वर ने गर्दिश के दिन में लिखते हैं कि "जब माँ रात को ढाई–तीन बजे उठकर हाथ में कपड़ा बांधकर कुट्टी काटती, चक्की चलाती, बर्तन धोती और प्रातःकाल होते ही नहा धोकर पुराने, जमींदार घराने की इज्जतदार मालिक बन जाती थी।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विषम परिस्थितियों के पश्चात् भी कमलेश्वर अपने परिवार को सम्भाल रहे थे। इन परिस्थितियों में कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना को परिवार चलाना मुश्किल था तथा आर्थिक समस्या के कारण इनकी शिक्षा भी प्रभावित रही हैं। लेकिन कमलेश्वर प्रतिकूल अवस्था में भी कमलेश्वर ने निरन्तर शिक्षा जारी रखी।

कुंजीभूत शब्द– वैष्णव संस्कारों, बाल्यकाल, बिछोह, परिवार, आर्थिक तंगी, गर्दिश, जमींदार, इज्जतदार, मालिक, विषम परिस्थिति।

कमलेश्वर को अपने पिता का अभाव जीवन पर्यन्त सताता रहा, जिसके बारे में अपनी रचना अपनी निगाह में लिखते है "कि पिता का प्यार मिल पाता तो शायद मेरे अधूरे बचपन और किशोरावस्था का सन्नाटा कुछ कम हो पाता, मुझे यह बताता कि दुनिया क्या है..... इस दुनिया का दस्तूर क्या है..... कि पिता के साथ मेले में जाने से क्या–क्या सुख मिलता है।"

कमलेश्वर का विवाह 27 वर्षों की आयु में 24.06.1958 को लेखिका गायत्री जी के साथ सम्पन्न हुआ। गायत्री का आगमन सभी रीति–रिवाजों के साथ हुआ। गायत्री जी एक सुशिक्षित एवं पढ़ी–लिखी होने के साथ–साथ दूरदर्शी स्त्री थी जो घर में समायोजन आसानी से कर लेती थी। उनका ससुराल था जहां की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के पश्चात् भी गायत्री जी को भी विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा, इसके पश्चात् भी कमलेश्वर एवं गायत्री का ह्रदय संवेदनशील होने के कारण इनमें अपार प्रेम एवं स्नेह का रस सदैव बना रहा। गायत्री जी कहती है कि "आश्चर्य की बात यह है कि उन दिनों कमलेश्वर जी की तनख्वाह 275 रुपये थी और मकान का किराया 250 रुपये था। आर्थिक रूप से अभी भी बहुत तंगी थी जो कुछ कहानियाँ आदि लिखते थे उसकी आमदनी से अपना खर्च चलाते थे।" इससे स्पष्ट होता है कि वह अपने छात्र जीवन से लेकर वैवाहिक जीवन तक अनेक समस्याओं का संघर्ष करते हुए नजर आते हैं।

कमलेश्वर को साहित्यिक प्रेरणा मार्क्सवादी चिन्तन धारा और मुंशी प्रेमचन्द से प्राप्त हुई। पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने जो बचपन में देखा और भोगा वही कमलेश्वर के साहित्यिक प्रेरणा का प्रस्थान बिन्दु है।

कमलेश्वर का कहना था कि उन्हें व्यक्ति प्रभावित नहीं करते, लेकिन देखा जाय तो उनकी माता ने उन्हें अवश्य प्रभावित किया है। आदर्श, यथार्थ एवं तर्कशक्ति उन्होंने अपनी माँ से प्राप्त की है। कमलेश्वर की माँ का मत है कि "जैसे है वह है" इस वक्तव्य से यथार्थ को स्वीकार करने का पहला पाठ माँ से मिला। कमलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में आन्दोलन के समय आरोपित सत्य का जमकर विरोध किया। इससे स्पष्ट होता है कि इस प्रकार तार्किक शक्ति उनको अपनी माता से प्राप्त हुई, जो उनके लेखन का स्पष्ट झलकता है।

कमलेश्वर की रचनाएँ उनके आस–पास के माहौल में रची बसी हैं। उन्होंने अपने यथार्थ जीवन के उतार–चढ़ाव, समाज की विकृत स्थिति, सामाजिक व्यवस्था, अपने गाँव का वातावरण इन सभी पर अपनी गहरी दृष्टि से विचार प्रकट किये हैं, जिसके कारण उनका कथा साहित्य भारतभूमि पर यथार्थ सिद्ध होता है। कमलेश्वर अपने कहानी के पात्रों के सन्दर्भ कहते हैं कि "मेरे पात्र अपने माहौल की, सुख–दुःख, आर्थिक तंगी, की कहानी अपने आप कहते हैं। मैं अपने पात्रों पर अधिक श्रम नहीं करता।" कमलेश्वर का लेखन सामान्य आदमी की नियति से जुड़ा हुआ है, जो अनुभव के रूप में प्रमाणिकता प्रदर्शित करती है।

कमलेश्वर का जीवन संघर्षमय था। उनके जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव आये पर वह कभी हार नहीं माने। उन्होंने समाज में फैली विसंगतियों एवं रूढ़िवादिता को समाप्त करने हेतु कथा साहित्य के माध्यम से लोगों को जागरुक करने का प्रयास किया, इसके लिए उन्होंने अपने शोध कार्य का भी परित्याग कर दिया और 'बहार' मासिक पत्रिका के लिए सम्पादन कार्य करने लगे। उनके सम्पादन कार्य में निरन्तर कुशलता आने लगी। कमलेश्वर स्वयं मध्यवर्ग से आते थे, इसलिए उनके साहित्य में मध्यवर्गीय समस्याओं और उनका संघर्ष दिखाई देता है। मध्यवर्गीय दृष्टिकोण से ही वे समाज को देखते हैं और उसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत भी करते हैं, उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक विषमताओं, रूढ़ियों और एक सांचे में बंधे समाज से निकलकर मुक्त गगन में विचरण करने वाले व्यक्ति आधारित समाज का सपना देखा रूढ़ियों में बंधा हुआ व्यक्ति को उससे निकालकर उसकी अपनी स्वेच्छा से जीवन जीने की वकालत करते हैं। वामपंथ उनके लेखन का दार्शनिक आधार था।

कमलेश्वर को राजकमल प्रकाशन में सम्पादन कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। दिन–ब–दिन वह सम्पादन कार्य में नित् नयी ऊचाईयों पर पहुँचते गये। कमलेश्वर 20वीं सदी के सशक्त साहित्यकार के रूप में जाने जाते थे। कमलेश्वर ने संचार एवं साहित्य के क्षेत्र में अपनी रचनाओं के बल पर एक सफल साहित्यकार के रूप में खुद को स्थापित किया। 1960 में हिन्दी सिनेमा जब अपने पूर्ण आकार में था, तब कमलेश्वर ने अपनी पटकथाओं से 'समांतर सिनेमा' का प्रारम्भ किया। सन् 1969 में 'सारा आकाश' फिल्म के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

माध्यम से अपनी पटकथा–लेखन का कार्य सम्पन्न किया। कमलेश्वर के उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय एवं संवेदनात्मक रूप को प्रदर्शित करते थे, जिनसे प्रेरणा लेते हुए उस युग के निर्माता एवं निर्देशक ने उनके उपन्यास का फिल्मांकन किया, जो काफी सफल एवं सराहनीय हुई। इसी से प्रेरणा पाते हुए कमलेश्वर ने अनेकों फिल्म पटकथा लिखी। उनकी लेखनी यथार्थवाद, संवेदना एवं वर्तमान जीवन मूल्य पर आधारित थी, उन्होंने साहित्य एवं सिनेमा को एक सूत्र में बाँधकर रखा। उनकी द्वारा लिखी गयी पटकथाएँ दर्शकों को चौकाने वाली थी जो सीधे मानव के ह्रदय को चोट करती थी, जो वैचारिक चिंतन के लिए लोगों को मजबूर करती थी।

कमलेश्वर ने अपने बहुचर्चित उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' में विमर्शमूलक चिंतन से व्यक्ति, समाज एवं वैश्विक उन्नयन की दिशायें स्पष्ट करती है। यह उपन्यास समाजकालीन समाज को जानने–पहचानने एवं सामाजिक कुरीतियों का सामना एवं उनसे निपटने के रास्ते भी खोज सकता है।

कमलेश्वर ने स्वतंत्रता के पश्चात् अपने कथा साहित्य में समाज में घटित होने वाली समस्याओं को ऐसे प्रस्तुत किया जिससे लोग प्रभावित होते गये, कमलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में समाज का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया और अपने लेखन को चार रूप में विभक्त कर एक ऐसा दर्शन दिखाने का प्रयास किया जो समाज के लोगों को सोचने एवं समझने की दिशा में अग्रसर कर सके।

विद्रोह और निडरता का आपस में निकट सम्बन्ध था उनके जीवन में। इस व्यक्तित्व की पहचान उनके जीवन के घटनाओं के दो उदाहरणों से लगाया जा सकता है पहला उदाहरण–1961 में जब वे दूरदर्शन (दिल्ली) में कार्यरत थे उसी समय उन्हें 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी लिखी थी। उनकी कहानी समाज के सिपहसलाहकार एवं सत्ताभोगियों को पसन्द नहीं आई, लेकिन कमलेश्वर ने समझौता नहीं किया और निर्देशक कृष्णमूर्ति से कहा 'सर' मुझे ये मेहरबानियाँ नहीं चाहिए। 'मैं कल से काम पर नहीं आऊँगा।' दूसरा उदहारण 'टाईम्स' की पत्रिका 'सारिका' से। शासन और सत्ता के खिलाफ उगलते ज्वालामुखी के समान उनके लेख सम्पादकीय त्यागपत्र का कारण बने। श्री अरविन्द कुमार के शब्दों में "उसने कभी अपने को छोटा नहीं समझा, न किसी से न पूरी व्यवस्था से वह कभी डरा नहीं, कभी एहसान नहीं भूला।" विमल मित्र के अनुसार–"मैं कमलेश्वर को साहित्य का विद्रोही लेखक मानता हूँ।" उन्होंने समानांतर वामपंथी लेखन का ही प्रचार–प्रसार किया, परंतु वे कभी न सच बोलने से डरे और न ही निकाले जाने से भयभीत थे। इसी निर्भीक स्वभाव ने उनकी कलम से सदा सच कहलवाया, वह सत्य चाहे 'करेला हो या नीमचढ़ा'। इस विद्रोह और निर्भीकता ने उनके जीवन को अदम्य आत्मविश्वास दिया। और यह भी सच है कि इसी स्वभावगत विशेषताओं के कारण उन्होंने भारी किम्मत चुकाई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कमलेश्वर, गर्दिश के दिन, पृ.सं.152.
2. कमलेश्वर, अपनी निगाह में, पृ.सं.56.
3. के.पी. जया, कथाकार कमलेश्वर, 2007, पृ.सं.44.
4. के.पी. जया, कथाकार कमलेश्वर, 2007, पृ.सं.54.
5. मधुकर सिंह, कमलेश्वर–सं., अरविन्द कुमार के लेख से, पृ.सं.97.

*****